

हनुमान मेरे वन के साथी सीता इन बिन ना मिल पाती



हनुमान मेरे वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

ये भी देखें – [बता दो हनुमान कैसे।](#)

सागर को पार करके,
सीता का पता लगाया,
लंका जला के इनने,
सब खाक में मिलाया,
इनसा ना कोई जग में,
बतलाना चाहता हूँ,
हनुमान मेरे वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

शक्ति लगी थी जिस दम,
लक्ष्मण को मेरे भाई,
एक भी नहीं था दल में,
लक्ष्मण का कोई सहाई,
सँजीवनी ये लाये,
बतलाना चाहता हूँ,
हनुमान मेरे वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

हमको चुरा अहिरावण,
पाताल ले गया था,
अब हम नहीं बचेगे,
विश्वास हो गया था,
अहिरावण को इनने मारा,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी आप अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



हनुमान मेरें वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

संकट की हर घड़ी में,
मेरे हुये सहाई,
इनका ऋणी रहूँगा,
ये मेरे भरत भाई,
भक्ति में शक्ति “राजेन्द्र”
समझाना चाहता हूँ,
हनुमान मेरें वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

हनुमान मेरे वन के साथी,
सीता इन बिन ना मिल पाती,
हनुमान का हरदम ऋणी रहूँ,
ऋणी रहूँ मैं ऋणी रहूँ।bd।

गायक / प्रेषक – राजेन्द्र प्रसाद सोनी ।
8939262340
